اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**अमीरे अहले सुन्नत का पहला ह़ज 1980**
सिने त़बाअ़त	:	ज़िल ह़ज **1444** हि., जून **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत का पहला ह़ज 1980**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद –1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ٥١ص١٣٨دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

पहले येह पढ़ लीजिये

आ़शिके़ मदीना, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को 1400 हिजरी मुत़ाबिक़ 1980 में पहला ह़ज अदा करने की सआ़दत मिली। अमीरे अहले सुन्नत के मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह में ह़ाज़िरी के मुन्फ़रिद अन्दाज़ और दीगर मा'मूलात, उ़म्रह और अरकाने ह़ज की अदाएगी की कैफ़िय्यात के बयान में आ़शिक़ाने रसूल बिल ख़ुसूस ह़रमैने त़य्यिबैन (मक्का व मदीना) जाने वालों के लिये तरबियत और ज़ौक़ो शौक़ में इज़ाफ़े का सामान है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इस मुबारक सफ़र को "शो'बए हफ़्तावार रिसाला" की त़रफ़ से तह़रीरी त़ौर पर पेश किया जा रहा है। इस की पहली क़िस्त़ "अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना", दूसरी क़िस्त़ "अमीरे अहले सुन्नत के सफ़रे मदीना के वाक़िआ़त" के नाम से पेश की जा चुकी है, अब तीसरी क़िस्त़ "अमीरे अहले सुन्नत का पहला ह़ज (1980)" आप के सामने है।

आज से कमो बेश 44 साल पहले 1980 में ऑडियो, वीडियो रेकॉर्डिंग या लिखने का बा क़ाइदा सिल्सिला न था कि सफ़रे ह़ज के तफ़्सीली ह़ालात मह़फ़ूज़ किये जा सकते। इस रिसाले में शामिल मा'लूमात व वाक़िआ़त के लिये ज़ियादा मदद "मदनी मुज़ाकरे" और दा'वते इस्लामी के चेनल के दीगर सिल्सिलों से ली गई है क्यूं कि कई सुवालात के जवाब में या ज़िम्नी त़ौर पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने पहले सफ़रे ह़ज के कुछ न कुछ अह़वाल ख़ुद बयान फ़रमाए, इस के इलावा दीगर ज़राएअ़ से भी मा'लूमात ह़ासिल की गईं, यूं ह़त्तल मक्दूर (या'नी त़ाक़त के मुत़ाबिक़) कोशिश कर के दुरुस्त मा'लूमात पर मुश्तमिल येह रिसाला ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तय्यार किया गया है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم इस मुबारक सफ़र की चौथी क़िस्त़ "अमीरे अहले सुन्नत की मदीनए पाक से जुदाई" जल्द पेश करने की कोशिश है। हर हफ़्ते दा'वते इस्लामी के सोशल मीडिया और ख़ुसूसन मदनी मुज़ाकरे में दा'वते इस्लामी के चेनल पर जिस रिसाले को पढ़ने का ए'लान किया जाता है उसे ज़रूर पढ़ या सुन लिया कीजिये। **अल्लाह** पाक हम सब को ह़ज व उ़म्रह की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत का पहला ह़ज 1980

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : “**अमीरे अहले सुन्नत का पहला ह़ज**” पढ़ या सुन ले उसे बार बार ह़ज व ज़ियारते मदीना से नवाज़ कर बिला ह़िसाबो किताब जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : फ़र्ज़ ह़ज करो, बेशक इस का अज्र बीस ग़ज़्वात में शिर्कत करने से ज़ियादा है और मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ना इस के बराबर है । (فردوس الاخبار، 1/339، حدیث:2484)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुर्शिद की इत़ाअ़त

अश्हुरे ह़ज (या'नी ह़ज के महीने) के बा बरकत अय्याम आ पहुंचे, ह़ज व ज़ियारते मदीना के शौक़ में हुज्जाजे किराम के क़ाफ़िले ह़िजाज़े मुक़द्दस (या'नी अ़रब शरीफ़) की त़रफ़ रवां दवां हुए । येह पुरकैफ़ व ज़ौक़ अफ़्ज़ा हवा चलते ही आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दिल में ह़ज का शौक़ बढ़ने लगा लेकिन मजबूरी येह थी कि आप उ़म्रे के वीज़े पर ह़रमैने शरीफ़ैन ह़ाज़िर हुए थे, आप की ख़ुश नसीबी कि इन्तिज़ामिया

की त़रफ़ से ए'लान हुवा कि ह़ज के अख़्राजात जम्अ़ करवाने वाला ह़ज कर सकता है। उन दिनों ह़ज के अख़्राजात सवा चार सो (425) या पांच सो (500) रियाल थे। बा'ज़ कहने वालों ने कहा : कोई पूछता नहीं है, मक्के चलते हैं, ह़ज कर लेंगे, रक़म देने की क्या ज़रूरत है ? मगर आ़शिक़े मदीना निहायत ह़स्सास थे, आप ने अपने पीरो मुर्शिद सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में येह बात अ़र्ज़ की तो पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया : "क़ानूनी ह़ज करो !" मुरीदे कामिल ने पीरे कामिल के फ़रमान पर लब्बैक कहते हुए अपना पासपोर्ट एक दोस्त के ज़रीए एजन्ट को जम्अ़ करवा दिया, एजन्ट ने पासपोर्ट ह़ज वीज़े के लिये जद्दा शरीफ़ भिजवा दिया, जब कई दिन गुज़र जाने के बा'द भी पासपोर्ट वापस न आया तो आप की बे क़रारी बढ़ने लगी, क्यूं कि मौसिमे ह़ज शुरूअ़ हो चुका और हुज्जाजे किराम के क़ाफ़िले जूक़ दर जूक़ अ़रब शरीफ़ पहुंचने शुरूअ़ हो गए थे। गोया कुछ ऐसी कैफ़िय्यत थी....

अ़रफ़ात और मुज़्दलिफ़ा और मिना चलूं   ह़ज कर लूं ह़क़ से इज़्न दिला दीजिये हुज़ूर

इसी दौरान अमीरे अहले सुन्नत को "मदीनए पाक" में एक मक़ाम पर अपने ही शहर के एक आ़लिम साह़िब ह़ज़रत मौलाना जमील अह़मद नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मिले।[1] आप ने आ़शिक़े मदीना की येह परेशानी देख कर फ़रमाया : "मुझे मदीने की गलियों में एक बुज़ुर्ग ने इस वज़ीफ़े की इजाज़त दी थी : [2]"قَلَّتْ حِيْلَتِيْ اَنْتَ وَسِيْلَتِيْ اَغِثْنِيْ يَارَسُوْلَ الله" मैं भी मदीने की गलियों में इस वज़ीफ़े की आप को इजाज़त देता हूं, मुराद पूरी होने के लिये येह वज़ीफ़ा बहुत अच्छा है।" आ़शिक़े मदीना ने चन्द ही बार येह

1... हुज़ूर सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इन्हें अपनी ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा था।
2... "اَغِثْنِيْ" की जगह "اَدْرِكْنِيْ" भी पढ़ा जा सकता है।

वज़ीफ़ा पढ़ा था कि पासपोर्ट पर वीज़ा लग कर आ गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! यूं अमीरे अहले सुन्नत के पहले हज के अस्बाब मुकम्मल हुए।

मिल गई कैसी सआदत मिल गई　　मुझ को अब हज की इजाज़त मिल गई

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सादाते किराम के साथ हज के लिये रवानगी

मदीनए पाक में क़ियाम के दौरान आप की कई आशिक़ाने रसूल से मुलाक़ात रही और आप की मिलन सारी और ख़ुश अख़्लाक़ी की वज्ह से बा'ज़ हज़रात से दोस्ती भी हो गई, उसी हल्क़ए अहबाब में से चन्द सादाते किराम आप से बड़ी महब्बत करते थे, उन का भी अ़ज़्मे हज (या'नी हज का इरादा) बना तो आप को अपने साथ चलने की ऑफ़र की, आशिक़े मदीना ने हामी भर ली। **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से यूं चन्द अफ़राद पर मुश्तमिल येह मुख़्तसर सा क़ाफ़िला एहराम बांध कर "हज्जे क़िरान"(1) की निय्यत कर के मदीनए पाक से मक्कए मुकर्रमा की जानिब रवाना हुवा। **अल्लाह** पाक की बारगाह में अमीरे अहले सुन्नत "वसाइले बख़्शिश" में अ़र्ज़ करते हैं :

जिस जगह आठों पहर अन्वार की हैं बारिशें　　ऐसी नूरानी फ़ज़ाओं में बुलाया शुक्रिया

ऐ अल्लाह पाक ! मैं हाज़िर हूं

हज के लिये आने वाले हुज्जाजे किराम की कसरत के सबब बलदुल अमीन (या'नी मक्कए पाक) की रौनक़ें उ़रूज पर थीं। आशिक़े मदीना ने त़वाफ़ व सई की सआदत ह़ासिल कर के उ़म्रह शरीफ़ मुकम्मल

---

(1)... येह हज की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, हिस्सा 6 और रफ़ीक़ुल हरमैन पढ़िये।)

किया। ह़ज्जे क़िरान करने वाले को त़वाफ़े क़ुदूम[1] करना होता है, आप ने वोह भी कर लिया। इस के बा'द आप ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के इस वाक़िए के तसव्वुर में खो गए कि जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एह़राम बांधा तो "लब्बैक" न पढ़ी। अ़र्ज़ की गई : या सय्यिदी ! लब्बैक ? फ़रमाया : मुझे डर है कहीं जवाब में "لَا لَبَّيْكَ" न कह दिया जाए। अ़र्ज़ की गई : "हुज़ूर ! एह़राम बांध कर लब्बैक कहना ज़रूरी है।" जूंही आप ने लब्बैक पढ़ी तो बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए कि येह किस अ़ज़मत वाली बारगाहे बे नियाज़ में ह़ाज़िरी का दा'वा कर रहा हूं। सारे रास्ते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की येही कैफ़िय्यत मुबारक रही कि जब भी लब्बैक पढ़ते बेहोश हो जाते। (تہذیب التہذیب، 5/670) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

(आ़शिक़े मदीना सोचने लगे) आह ! मैं तो यूंही बिला तकल्लुफ़ "लब्बैक" पढ़ आया। क्या इस के मा'ना पर भी नज़र की ? لَبَّيْكَ "मैं ह़ाज़िर हूं" اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ "ऐ **अल्लाह** मैं ह़ाज़िर हूं" اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْك "बेशक तेरे लिये ही ख़ूबी, ने'मत और बादशाहत है" لَا شَرِيْكَ لَك "तेरा कोई शरीक नहीं।" न बदन पर कपकपी त़ारी हुई, न जिस्म में झुरझुरी आई और न ही येह एह़सास हुवा कि क्या कह रहा हूं।

जो हैबत से रुके मुजरिम तो रह़मत ने कहा बढ़ कर चले आओ चले आओ येह घर रह़मान का घर है

ज़िन्दगी में पहली बार ह़जरे अस्वद का बोसा

आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत ने इसी ह़ज (1980 ई.) में

1... मीक़ात के बाहर से आने वाला मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ाज़िर हो कर सब में पहला जो त़वाफ़ करे उसे त़वाफ़े क़ुदूम कहते हैं। "क़िरान" करने वालों के लिये येह सुन्नते मुअक्कदा है। (बहारे शरीअ़त, 1/1050, ह़िस्सा : 6)

पहली बार “हजरे अस्वद” को बोसा दिया (या'नी चूमा) और मक़ामे इब्राहीम पर मौजूद उस मुबारक पथ्थर की भी ज़ियारत की जिस पर खड़े हो कर हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने का'बे शरीफ़ की ता'मीर की थी। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/277)

पैदल हज

इस सफ़र के वक़्त आशिक़े मदीना की उम्र तक़रीबन 30 साल थी। आप ने अपने रुफ़क़ा के साथ “पैदल हज” का इरादा किया फिर मक्कए पाक से मिना शरीफ़, वहां से अ़रफ़ात और वहां से मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ तक का सफ़र पैदल किया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : जो मक्के से पैदल हज को जाए यहां तक कि मक्के वापस आए उस के लिये हर क़दम पर सात सो नेकियां ह़रम शरीफ़ की नेकियों के मिस्ल लिखी जाएंगी। अ़र्ज़ किया गया : ह़रम की नेकियों की क्या मिक़्दार है ? फ़रमाया : हर नेकी लाख नेकी है।

(مستدرک للحاکم، 2/114، حدیث:1735)

हज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह ह़दीसे पाक लिखने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : इस ह़िसाब से हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां हुईं। وَاللّٰهُ ذُوالْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (या'नी और **अल्लाह** पाक बड़े फ़ज़्ल वाला है)। (बहारे शरीअ़त, 1/1032, ह़िस्सा : 6 ब तसर्रुफ़े क़लील)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर हो सके तो पैदल हज करे कि अफ़्ज़ल है।

(احیاء العلوم، 1/391)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आशिके मदीना की रफ़ीके सफ़र किताब

आशिके मदीना के सफ़रे हज की भी क्या ख़ूब बात है ! इस मुबारक सफ़र में जो शानदार और अज़ीम किताब रफ़ीके सफ़र थी वोह आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की अहकामे हज पर मुश्तमिल[1] ''اَنْوَارُالْبِشَارَۃِ فِیْ مَسَائِلِ الْحَجِّ وَ الزِّیَارَۃِ'' थी। मदीनए मुनव्वरह की तरह आशिके मदीना मक्कए मुकर्रमा में भी नंगे पाउं रहे।

मैं मक्के में फिर आ गया या इलाही करम का तेरे शुक्रिया या इलाही

चलो चलो मिना चलो

8 ज़ुल हज शरीफ़ का दिन आया तो हाजियों का ठाठें मारता समुन्दर गोया ''चलो चलो मिना चलो'' की सदाएं लगाता सूए मिना रवाना हुवा। मिना शरीफ़ में आशिके मदीना के क़ाफ़िले वालों ने एक पहाड़ पर चढ़ कर ख़ैमा गाड़ा। ज़रूरत का सामान अनाज वग़ैरा भी साथ था। इस हज में अमीरे अहले सुन्नत पर कई इम्तिहान आए मगर आप ''रिज़ाए मौला अज़ हमा औला या'नी **अल्लाह** पाक की मरज़ी सब से बेहतर है'' के मिस्दाक़ साबित क़दम रहे। पहला इम्तिहान येह हुवा कि पहाड़ पर चढ़ने उतरने की वज्ह से आप की कमर में झटका आ गया। जिस की वज्ह से तक्लीफ़ शुरूअ़ हो गई। आप एक रफ़ीक़ (दोस्त) के साथ मुस्तश्फ़ा

1... अमीरे अहले सुन्नत ने ''انوار البشارۃ فی مسائل الحج والزیارۃ'' और ''बहारे शरीअ़त'' वग़ैरा की मदद से नीज़ मौजूदा दौर के कई अहम मसाइल को अपने तजरिबात की रोशनी में जम्अ़ कर के दो जामेअ़ किताबें बनाम ''रफ़ीक़ुल ह़रमैन'' और ''रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन'' लिखी है। हज व उ़म्रे के सफ़र पर येह किताब पास होना बहुत ज़रूरी है। ज़हे नसीब ! ''आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात'' किताब का मुतालआ भी रहे तो कैफ़ो सुरूर में इज़ाफ़ा होता रहेगा। तजरिबा शर्त है।

(Hospital) तशरीफ़ ले गए, चेकअप करवा कर वापस आए तो इम्तिहान पर इम्तिहान येह हुवा कि अपने ख़ैमे का मक़ाम याद न रहा और आप अपने ख़ैमे तक न पहुंच सके। यूं अमीरे अहले सुन्नत पहले ही दिन अपने क़ाफ़िले से बिछड़ गए।

मैदाने अ़रफ़ात ह़ाज़िरी

9 ज़ुल ह़ज शरीफ़ यौमे अ़रफ़ा आया तो लाखों लाख ज़ुयूफ़ुर्रह़मान (या'नी **अल्लाह** पाक के मेहमान) हुज्जाजे किराम मैदाने अ़रफ़ात जाने की तय्यारियों में थे। ह़ज का सब से बड़ा रुक्न "वुक़ूफ़े अ़रफ़ा" है। जो ह़ालते एह़राम में 9 ज़ुल ह़िज्जा को दोपहर ढलने (या'नी नमाज़े ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने) से ले कर दसवीं की सुब्ह़े सादिक़ के दरमियान एक लम्ह़े के लिये भी इस मैदान में दाख़िल हो गया वोह ह़ाजी बन गया। आ़शिक़े मदीना अपने उसी रफ़ीक़ के साथ मिना शरीफ़ से तक़रीबन ग्यारह किलो मीटर दूर पैदल मैदाने अ़रफ़ात की जानिब बढ़ना शुरूअ़ हुए। बिल आख़िर अ़रफ़ात का वोह अ़ज़ीमुश्शान और मुबारक मैदान आ गया जहां **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में ह़ज के मौक़अ़ पर तशरीफ़ लाए और जबले रह़मत के पास ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया। हर साल यौमे अ़रफ़ा में दो अम्बियाए किराम ह़ज़रते ख़िज़्र व इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام भी इस बा बरकत मैदान में तशरीफ़ फ़रमा होते हैं। अ़रफ़ात में अमीरे अहले सुन्नत कहीं से गुज़र रहे थे कि एक ख़ैमे वाले ने आप से अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! दुआ़ करवा दें। वहां आप ने बारगाहे इलाही में रिक़्क़तो सोज़ के साथ अश्कबारी करते (या'नी आंसू बहाते) हुए अपने मख़्सूस अन्दाज़ में दुआ़ करवाई।

मुज़्दलिफ़ा की रात

एक दिन में मिना शरीफ़ से अ़रफ़ात और अ़रफ़ात शरीफ़ से मुज़्दलिफ़ा का सफ़र और मुख़्तलिफ़ इ़बादात वग़ैरा के सबब हुज्जाजे किराम उस रात बहुत ज़ियादा थक जाते हैं गोया थकन भी थक गई हो। अमीरे अहले सुन्नत मैदाने अ़रफ़ात की ह़ाज़िरी के बा'द वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा के लिये रवाना हुए तो रास्ते में मरीज़, मा'ज़ूर, थके मांदे हुज्जाजे किराम को दूसरों के कन्धों पर सुवार हो कर जाते देखा। सारे रस्ते पैदल चल चल कर आप के पाउं में वरम आ गया, हुज्जाजे किराम से भरी गाड़ियां इस त़रह़ दौड़ी चली जा रही थीं कि रोके न रुकतीं। आप थकन से निढाल थे कि **अल्लाह** पाक की रह़मत और ग़ैबी मदद हुई कि आप के पास एक कार आ कर रुकी, उस में उर्दू बोलने वाले चन्द अफ़राद थे, उन्हों ने ऑफ़र की : हम मुज़्दलिफ़ा जा रहे हैं, आप बैठ जाएं, हम आप को वहां छोड़ देंगे। आप ने दिल ही दिल में इस ने'मते इलाही का शुक्र अदा किया और गाड़ी में बैठ गए, **अल्लाह** पाक के उन नेक बन्दों ने आप को मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ में पहुंचा दिया।

त़वाफ़ो सई गर्चे तुम को थका दें किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है
मिना और अ़रफ़ात में भीड़ होगी किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल

बा'ज़ उ़लमाए किराम के नज़्दीक मुज़्दलिफ़ा की रात ह़ाजी के लिये "शबे क़द्र" से भी अफ़्ज़ल है। मुज़्दलिफ़ा के मैदान से शैत़ान को मारने के लिये कंकरियां लेना बेहतर है।[1] अमीरे अहले सुन्नत रात गुज़ार

1... कंकरियां चुनने नीज़ रमिये जमरात के त़रीक़े के लिये अमीरे अहले सुन्नत की किताब "रफ़ीक़ुल ह़रमैन" सफ़ह़ा 183 ता 191 पढ़िये।

कर वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा के बा'द रमिये जमरात (या'नी शैत़ान को कंकरियां मारने) के लिये मिना तशरीफ़ ले गए।

एक शख़्स की जान बचाई

वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा के बा'द हुज्जाजे किराम के रेले रमिये जमरात के लिये रवाना हो रहे थे। उन दिनों ह़ज के दौरान शैत़ान को कंकरियां मारने वाले मक़ाम पर बहुत ज़ियादा रश वग़ैरा के सबब ह़ादिसात हो जाते थे, कई हुज्जाज कुचले जाने के सबब फ़ौत हो जाते। उस साल भी ऐसा ही कुछ हुवा। एक मक़ाम पर लाशों के ढेर देख कर आप को बड़ी ह़ैरानी हुई फिर पता चला कि येह एक ढेर नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ जगहों पर इस त़रह़ लाशें इकठ्ठी की जाती हैं। आप आगे बढ़ते रहे, अचानक आप की नज़र एक शख़्स पर पड़ी जो हुजूम में गिर गया, क़रीब था कि वोह कुचला जाता, अमीरे अहले सुन्नत से रहा न गया, आप ने झुक कर दोनों हाथों से उठा कर उसे खड़ा कर दिया अगर्चे ऐसे रश के मवाक़ेअ़ पर ज़मीन पर झुकने या ज़मीन से चीज़ उठाने में सख़्त अन्देशा होता है कि पीछे आने वाला रेला गिरा दे और फिर ऊपर चढ़ता, कुचल्ता गुज़र जाए लेकिन आप से आंखों के सामने किसी मुसल्मान के गिरने दबने का मन्ज़र देखा न गया। आप के दोस्त ने आप से कहा : इल्यास! येह क्या किया ? तो आप ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया : "उस के दिल से पूछो।" गोया जिस की जान बच गई उस से पूछो कि वोह किस क़दर ख़ुश होगा।

जमरात पर कंकरियां मारते वक़्त येह तसव्वुर कीजिये

पहले दिन चूंकि बड़े शैत़ान को कंकरियां मारी जाती हैं, अमीरे अहले सुन्नत ने भी कंकरियां मारीं। आप फ़रमाते हैं : शैत़ान को कंकरियां

मारते वक़्त येह तसव्वुर करना चाहिये कि जो शैत़ान (या'नी हमज़ाद) मुझ पर मुसल्लत़ है, मैं उसे मार रहा हूं।

ह़ज की क़ुरबानी

फिर आप अपने रफ़ीक़ के साथ जानवर ख़रीद कर क़ुरबानी के लिये क़ुरबान गाह तशरीफ़ ले गए, वहां लोग क़ुरबानी के लिये छुरियां बेच रहे थे, आप ने एक छुरी ख़रीद कर अपना और अपने रफ़ीक़ का जानवर अपने हाथों से ज़ब्ह़ किया, देखा देखी दीगर ह़ाजी साहि़बान भी आने लगे कि हमारा जानवर ज़ब्ह़ कर दीजिये। आप ने ख़ैर ख़्वाही व हमदर्दी करते हुए बिला मुआ़वज़ा (Free of Charge) आठ जानवर ज़ब्ह़ किये।

एक बार फिर ग़ैबी मदद

क़ुरबानी से फ़ारिग़ हुए तो एह़राम पर ख़ून की कुछ छींटें थीं। इस मौक़अ़ पर आप का येह दोस्त भी बिछड़ गया और आप अकेले रह गए। दोपहर का वक़्त हो चुका था, अमीरे अहले सुन्नत को नमाज़े ज़ोह्‌र अदा करनी थी और बदन पर मौजूद ख़ून आलूद एह़राम के इ़लावा कोई लिबास नहीं था जिसे पहन कर नमाज़ अदा की जा सके। भूक और प्यास के आ़लम में अकेले चलते चलते अमीरे अहले सुन्नत वादिये मिना के रास्तों में इन्तिज़ामिया की त़रफ़ से ड्यूटी पर मुक़र्रर अ़रबी लोगों से पूछते : [1]"فَيْنَ سُوْقُ الْعَرَبْ" या'नी सूक़ुल अ़रब (एक मक़ाम का नाम) कहां है ? कोई फ़ौक़ या'नी ऊपर की त़रफ़ कहता और कोई तह़्त या'नी नीचे जाने का बताता। बा'द में पता चला कि येह ह़ज़रात मक्का शरीफ़ के अत़राफ़ गाउं वग़ैरा से ख़ास तौर पर अय्यामे ह़ज में ड्यूटी करने आते हैं, हो सकता है

1... अ़रबी में أَيْنَ का मा'ना है "कहां"। अ़रब शरीफ़ वग़ैरा में अ़वाम أَيْنَ को فِيْن बोलती है इस लिये आप ने येह फ़रमाया।

इन्हें भी इतना ज़ियादा रास्तों का इ़ल्म न होता हो। आप ने एक गाड़ी वाले अ़रबी शख़्स से सलाम कर के अपने अन्दाज़ में बात की, कि मैं अपने क़ाफ़िले से बिछड़ गया हूं, मुझे "सूक़ुल अ़रब" जाना है। उस भले शख़्स ने आप को अपनी गाड़ी में बिठाया और चल पड़ा, रास्ते में उस ने आप को खाने के लिये एक सेब भी पेश किया। रास्ते में बहुत रश था, दूर तक लोगों के सर ही सर नज़र आ रहे थे, गाड़ी गोया रींगती हुई चली जा रही है। जैसे तैसे कर के "सूक़ुल अ़रब" पहुंचे तो ड्राइवर ने कहा : "هٰذَاسُوْقُ الْعَرَبْ" या'नी येह सूक़ुल अ़रब है। आप गाड़ी से उतर कर एक बार फिर ना मा'लूम मन्ज़िल की जानिब चलने लगे। आप को एक मुअ़ल्लिम का नाम याद आया। बस फिर क्या था ! पूछते पूछते उस के ख़ैमे की त़रफ़ बढ़े क्यूं कि आप के अ़लाक़े के मेमन हुज्जाजे किराम उस के ख़ैमे में होते थे। वहां पहुंचे तो आप को शहीद मस्जिद के अपने एक मुक़्तदी मर्हूम ह़ाजी अ़ली बरकाती (रंगीला) मिले जो पक्के आ़शिक़े रसूल और बरकातिया सिल्सिले में ताजुल मशाइख़ ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद मियां मारेह्रवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के मुरीद थे, आप ने उन्हें बताया कि मैं अपने क़ाफ़िले से बिछड़ गया हूं। मुझे ज़ोह्र की नमाज़ पढ़नी है और मेरे कपड़े ख़ून वाले हैं, पानी का बन्दोबस्त हो जाए, उन्हों ने पानी का जालोन (या'नी गेलन) ला कर आप को दे दिया। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि अमीरे अहले सुन्नत के मर्हूम भाई अ़ब्दुल ग़नी के बेटे और आप के भतीजे "ह़ाजी अन्वर उ़र्फ़ ह़ाजी पे[1]" भी ह़ज पर आए हुए थे,

---

1... मेमनी में "पे" वालिद को कहते हैं। अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के नाम पर अमीरे अहले सुन्नत के भाई अ़ब्दुल ग़नी साह़िब ने अपने बेटे का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रखा था, उन्हें प्यार से "ह़ाजी पे" कह कर पुकारा जाता था।

वहां वोह भी आप को मिल गए, आप उन से गुफ़्तगू फ़रमा ही रहे थे कि "आग ! आग !" का शोर बुलन्द हुवा और आग के शो'ले नज़र आने लगे।[(1)]

चारों त़रफ़ आग

आप के वोह दोस्त जिन्हों ने पानी की बोतल ला कर दी थी, फ़ौरन अपने सामान की त़रफ़ येह कहते हुए दौड़े कि मैं अपने पैसों का बेल्ट ले लूं। अमीरे अहले सुन्नत ने फ़रमाया : मेरी दौलत तो येह पानी की बोतल है और मुझे नमाज़े ज़ोहर पढ़नी है। इस अफ़रा तफ़री के माहोल में भी आप घबराए नहीं, जब ख़ैमे से बाहर आए तो देखा कि आग के शो'ले आस्मान से बातें कर रहे हैं और अ़वाम बद ह़वासी के आ़लम में दौड़ रही थी। कुछ ही देर में हेलीकॉप्टर्ज़ आ गए जिन से आग पर क़ाबू पाने के लिये पानी फेंका जा रहा था। अमीरे अहले सुन्नत ने अपने त़ौर पर अ़वाम को दौड़ने और भगदड़ वग़ैरा से बचने की एह़तियातें बताने की कोशिश की, कि आग बहुत दूर है, तुम्हारे पीछे नहीं दौड़ रही। मगर उस हुजूम में कौन सुने, कौन रुके![(2)]

1... पहले ह़ज के मौक़अ़ पर मिना शरीफ़ में तक़रीबन हर साल आग लगती थी क्यूं कि ह़ाजी साहिबान चूल्हे ले कर जाते थे। फिर वहां इन्तिज़ामिया ने चूल्हे ले जाने पर पाबन्दी लगा दी तो बा'ज़ लोग छुपा कर ले जाते थे। अगर पोलीस वाले देख लेते तो चूल्हा तोड़ दिया करते थे। सज़ा न होने के सबब लोग येह सोच कर चूल्हा ले जाते कि अगर पकड़े भी गए तो सिर्फ़ चूल्हा ही टूटेगा। यूं आग लगने का सिल्सिला बन्द न हुवा और जब भी आग लगती तो लाशों के ढेर लग जाते, फिर येह ह़ल निकाला कि मिना शरीफ़ में Fire Proof या'नी आग से मह़फ़ूज़ रहने वाले ख़ैमे लगा दिये गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! इस ए'तिबार से अब ह़ज के इन्तिज़ामात पहले के मुक़ाबले में काफ़ी बेहतर हैं जिस की वज्ह से बहुत आसानी हो गई है।

2... ख़ुदा न ख़्वास्ता जब कभी भगदड़ वग़ैरा की आज़्माइश में फंस जाएं तो लोगों की देखा देखी भागने की बजाए अपने आप को किसी दीवार या सुतून वग़ैरा की आड़ में ले लें ताकि अन्धाधुन्ध भागने वाला रेला गुज़र जाए, वरना आप उन की स्पीड से भाग न सकने या किसी भी वज्ह से गिर कर उन के क़दमों तले कुचले जा सकते हैं।

नमाज़ की फ़िक्र

लोग जान बचाने की कोशिशों में मुख़्तलिफ़ सम्त दौड़ रहे थे जब कि अमीरे अहले सुन्नत इस सख़्त आज़्माइश की ह़ालत में भी नमाज़ की अदाएगी की फ़िक्र में मसरूफ़ थे, आप ने एक ख़ैमे वाले से फ़रमाया : क़ुरबानी के ख़ून के सबब मेरा एह़राम नापाक हो गया है, थोड़ी जगह दे दीजिये ताकि मैं पानी से बदन वग़ैरा पाक कर के नमाज़ अदा कर लूं, येह सुन कर एक बेबाक शख़्स बोला : "मौलाना ! हमारे भी कपड़ों पर ख़ून लगा हुवा है, हम ने भी ऐसे ही नमाज़ पढ़ी है, दिल तो पाक है।" مَعَاذَاللہ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह बहुत सख़्त जुम्ला है, इस जुम्ले में कुफ़्रिय्या पहलू निकलता है। क्यूं कि नमाज़ के लिये त़हारत शर्त़ है और ज़ब्ह़ के वक़्त निकलने वाला ख़ून नापाक होता है। उस बद नसीब ने गोया नमाज़ की शर्त़ का इन्कार कर दिया कि दिल तो पाक है ना ? ऐसे शख़्स के लिये ज़रूरी है कि वोह इस बात से तौबा कर के कलिमा पढ़े और नए सिरे से निकाह़ भी करे, बहर ह़ाल अमीरे अहले सुन्नत वहां से बाहर wash rooms की त़रफ़ आ गए, बस आप को एक ही फ़िक्र थी कि मेरी नमाज़ न निकल जाए, यहां दोबारा मर्ह़ूम ह़ाजी अ़ली बरकाती (रंगीला) मिल गए, आप ने इन्हें फ़रमाया : आप तो नमाज़ पढ़ चुके हैं, मुझे अपना एह़राम दे दें और मेरा एह़राम आप पहन लें, आप ने पानी की दो बोतलों से बदन पर लगे ख़ून को साफ़ किया और मज़ीद पानी की दो बोतलें ख़रीद कर वुज़ू कर के اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! वक़्त के अन्दर ही नमाज़े ज़ोह्र अदा फ़रमा ली।

हर इ़बादत से बरतर इ़बादत नमाज़ सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ल्क़ और त़वाफ़े ज़ियारत

ह़ल्क़ शरीफ़ के बा'द मक्कए पाक ह़ाज़िर हो कर ह़ज के दूसरे अहम तरीन रुक्न "त़वाफ़े ज़ियारत" की सआ़दत पाई और यूं अरकाने ह़ज मुकम्मल हुए मगर अभी ग्यारहवीं और बारहवीं की रमी बाक़ी थी। आप दोबारा मिना शरीफ़ में आ गए। मिना शरीफ़ में जिस मक़ाम पर आग लगी थी वहीं आप के बिछड़े दोस्त मिल गए। ख़ैमे की सहूलत नहीं थी। अमीरे अहले सुन्नत उन दिनों नूर मस्जिद में इमामत फ़रमाते थे। रास्ते में नूर मस्जिद के क़रीब रहने वाले एक ह़ाजी साहिब मिल गए, उन्हों ने आप को अपने पास रुकने की ऑफ़र की जो आप ने क़बूल कर ली। आप अपने जानने वाले को फ़ज्र की नमाज़ के लिये जगाने की ताकीद कर के आराम फ़रमाने के लिये लैट गए। लेकिन कई दिनों की थकन के बा वुजूद फ़ज्र के वक़्त किसी के उठाए बिग़ैर ही आप की आंख खुल गई और आप ने नमाज़े फ़ज्र अदा कर ली। उन दिनों पानी की सख़्त क़िल्लत (या'नी कमी) होती थी। वुज़ूख़ानों पर काफ़ी रश होता। कई बार पानी ख़रीद कर गुज़ारा करना पड़ता। दूसरी रात आप को नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के लिये पानी की कमी के अन्देशे और फ़ज्र में थकन की वज्ह से आंख न खुलने की तश्वीश के सबब नींद नहीं आ रही थी। आप ने एक बोतल में पानी भरा और वोह बोतल एक सुतून (PILLAR) के पीछे छुपा दी और ख़ुद सुतून से टेक लगा कर बैठ गए, बैठे बैठे नींद आ गई। नमाज़े फ़ज्र के वक़्त आंख खुली तो नींद की ह़ालत में पानी की बोतल की जानिब हाथ बढ़ाया तो येह क्या ! पानी की बोतल ग़ाइब थी, फिर किसी त़रह़ पानी ह़ासिल कर के नमाज़े फ़ज्र अदा की।

अमीरे अहले सुन्नत और नमाज़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत फ़राइज़ो वाजिबात के साथ साथ सुननो मुस्तहब्बात के भी बड़े पाबन्द हैं, भला येह कैसे मुम्किन है कि आप की फ़र्ज़ नमाज़ छूट जाए ? आप नमाज़ के मुआमले में बेहद हस्सास हैं। आप फ़रमाते हैं : मुझे याद नहीं पड़ता कि मेरी ज़िन्दगी में कभी कोई नमाज़ क़ज़ा हुई हो बल्कि आप बैरूने मुल्क सफ़र के लिये भी ऐसी फ़्लाइट का इन्तिख़ाब फ़रमाते हैं जिस के दौरान नमाज़ न आए क्यूं कि जहाज़ वग़ैरा में वुज़ू कर के नमाज़ अदा करना आसान काम नहीं। चन्द सालों क़ब्ल आप का ऑपरेशन हुवा तो उस में भी आप ने डॉक्टर से इशा की नमाज़ के बा'द का वक़्त लेना पसन्द फ़रमाया ताकि ऑपरेशन और बेहोशी वग़ैरा के बा'द नमाज़े फ़ज्र वक़्त में अदा की जा सके। अमीरे अहले सुन्नत अपनी ना'तिया किताब "वसाइले फ़िरदौस" में नमाज़ के बारे में लिखते हैं :

प्यारे आक़ा की आंखों की ठन्डक है येह — *क़ल्बे शाहे मदीना की राहत नमाज़*
भाइयो ! गर ख़ुदा की रिज़ा चाहिये — *आप पढ़ते रहें बा जमाअ़त नमाज़*
जो मुसल्मान पांचों नमाज़ें पढ़ें — *ले चलेगी उन्हें सूए जन्नत नमाज़*
होगी दुन्या ख़राब आख़िरत भी ख़राब — *भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़*
या ख़ुदा तुझ से अ़त्तार की है दुआ़ — *मुस्तफ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने अमीरे अहले सुन्नत ! हमें भी चाहिये कि फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी में किसी क़िस्म की कोताही न करें बल्कि पांचों नमाज़ें

बा जमाअ़त पहली सफ़ में अदा करें। आ़शिक़े मदीना का इसी सफ़रे ह़ज से वापसी पर नमाज़ की पाबन्दी के ह़वाले से एक और वाक़िआ़ पढ़िये जिस में आप ने न सिर्फ़ अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाज़त की बल्कि अपने साथ कई हुज्जाजे किराम को भी गाड़ी से उतर कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ने की तरग़ीब दिलाई। वाक़िआ़ पढ़िये और 72 नेक आ'माल के रिसाले में नेक अ़मल नम्बर 3 "क्या आज आप ने घर, बाज़ार, मार्केट वग़ैरा जहां भी थे वहां नमाज़ों के अवक़ात में नमाज़ पढ़ने से क़ब्ल नमाज़ की दा'वत दी ?" पर अ़मल करने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

मक्कए पाक से दोबारा मदीना शरीफ़ वापसी

ह़ाजियो ! आओ शहन्शाह का रौज़ा देखो   का'बा तो देख चुके का'बे का का'बा देखो

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस मुबारक शे'र का गोया ह़क़ीक़ी फ़ैज़ान, ह़ज की क़बूलिय्यत पाने और का'बे के का'बे के दीदार के लिये आ़शिक़े मदीना मनासिके ह़ज अदा कर के एक बार फिर सूए मदीना रवाना हुए तो आप कई हुज्जाजे किराम के साथ मदीनए पाक जाने वाले एक ट्रक में सुवार हो गए, सफ़र शुरूअ़ होने से क़ब्ल ही आप ने ड्राइवर से रास्ते में मुनासिब जगह पर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के लिये गाड़ी रोकने की ताकीद कर दी थी। रात का वक़्त था, सफ़र शुरूअ़ हुवा तो बैठे बैठे आंख लग गई। देर बा'द आंख खुली तो ट्रक सह़राए अ़रब में मदीनए पाक की जानिब बढ़ रहा था, अमीरे अहले सुन्नत को आस्मान पर कुछ सफ़ेदी सी नज़र आई तो लगा कि फ़ज्र का वक़्त हो गया है, आप ने "सलात सलात" या'नी नमाज़ नमाज़ की सदाएं बुलन्द

करना शुरूअ़ कीं और साथ ही ज़ोर ज़ोर से ट्रक की साईड पर हाथ मारा, ड्राइवर ने ट्रक रोका, सब लोग उतरे। वोह वाक़ेई सह़राए अ़रब था, हर त़रफ़ ख़ामोशी, दूर दूर तक पानी का नामो निशान न था। आप के पास आबे ज़मज़म शरीफ़ की बोतल थी, مَاشَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم ! उस वक़्त भी आप की शरई मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से कैसी मा'लूमात थीं कि आप ने ह़ाजियों से फ़रमाया : मेरे पास आबे ज़मज़म है इस लिये मैं तयम्मुम नहीं कर सकता,[1] हां ! जो पानी पर क़ुदरत नहीं रखता वोह तयम्मुम कर ले। (فتاویٰ تاتارخانیہ، 1/234) **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बा'द एक बार फिर आप का सफ़रे मदीना शुरूअ़ हो गया और اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अब आप "ह़ाजी" बन कर ह़ाज़िर हुए। वसाइले बख़्शिश में है :

सरकार फिर मदीने में अ़त्त़ार आ गया फिर आप का गदा शहे अबरार आ गया

आ़सी पे कीजिये करम ऐ शाफ़ेए़ उमम अ़त्त़ार मग़्फ़िरत का त़लब गार आ गया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علی مُحَمَّد

(बक़िय्या अगली क़िस्त़ में......)

1... फ़तावा रज़विय्या में है : हमारे अइम्मए किराम के नज़्दीक ज़मज़म शरीफ़ से वुज़ू व ग़ुस्ल बिला कराहत जाइज़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 2/452 मुलख़्ख़सन)